शिक्षा संदर्श

3. शिक्षा संदर्श

3.1. प्रस्तावना

शिक्षा निदेशालय को भा.वा.अ.शि.प. का महत्वपूर्ण अंग होने के कारण राज्य और केंद्रीय विश्वविद्यालयों के जरिए देश में वानिकी शिक्षा को प्रेरित और मार्गदर्शित करने का दायित्व सौंपा गया है तथा :–

- व.अ.स.–सम–विश्वविद्यालय को वानिकी की उच्च शिक्षा हेतु एक शानदार संस्थान के रूप में विकसित करना।
- संरचनात्मक खामियों को दूर करते हुए सहायता अनुदान के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- पाठ्यक्रम में निरंतर संशोधन करते हुए वानिकी शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहना।
- वानिकी में विहित अधिकृत मान्य पद्धति द्वारा गुणवत्ता आश्वासन की रूपरेखा उपलब्ध करवाना।
- पारस्परिक सहजीविता और सक्रियता को आगे बढ़ाते हुए भा.वा.अ.शि.प. की अनुसन्धान पद्धति के साथ वानिकी शिक्षा संस्थानों को संयोजित करना।
- संकाय और छात्रों के हस्तांतरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ जुड़ना।
- विभिन्न पात्रों में वानिकी को मुख्य धारा में लाने के लिए वानिकी व्यावसायिकों की रोजगार क्षमता में वृद्धि करना।
- वानिकी व्यवसाय के लिए प्रतिभाओं को आकर्षित करना।
- परिषद् के वैज्ञानिक एवं तकनीकी संवर्ग तथा सामान्यत: सभी खण्डों को क्षमता वृद्धि हेतु अवसर प्रदान करना।
- नीति अनुसन्धान निवेश के द्वारा वानिकी में नीतियों को समर्थन देना।

3.2. वानिकी शिक्षा में प्रक्रियाएं :

निदेशालय द्वारा उपर्युक्त अधिदेश को निम्नलिखित प्रक्रियाओं द्वारा प्राप्त किया जाता है :

- वानिकी शिक्षा को प्रोत्साहित करते हुए वानिकी शिक्षा के उच्च मानक तय करके विश्वविद्यालय में शिक्षण तथा अनुसन्धान संरचना तैयार करना।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पठन–पाठन संसाधनों तक पहुंच बनाना, जिसमें ई–कंसोर्टियम और सूचना पद्धति के जरिए पुस्तकें और जर्नल्स शामिल हैं।
- शैक्षिक उत्कृष्टता के लिए सुव्यवस्थित सूचना प्रौद्योगिकी के जरिए वातावरण उपलब्ध करवाना।
- सुव्यवस्थित अधिकृत पद्धति उपलब्ध है। वानिकी शिक्षा देने वाले सभी विश्वविद्यालयों को अधिमान्य करने के प्रयास किए जा रहे हैं।
- मुख्य समीक्षा प्रक्रिया द्वारा प्रत्येक विश्वविद्यालय की भविष्य में उन्नति के लिए संस्थानिक प्रबंधन, वित्तीय संसाधन आवंटन और उपयोजन, भौतिकीय संरचना, संकाय और स्टाफ, विद्यार्थियों की सुविधा हेतु प्रोफाईल, कोर्स का चयन, सह–शैक्षिक क्रियाकलाप, अनुसन्धान और विकास का स्पष्ट मार्ग प्रशस्त करना।
- वानिकी क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप आवधिक पाठ्यक्रम का संशोधन तथा उच्चीकरण करना जिसमें हितधारकों की व्यापक सहभागिता हो और अधिक स्वीकार्यता के लिए दोनों परिषदों (आई सी ए आर तथा भा.वा.अ.शि.प.) का अनुमोदन हो।
- वानिकी शिक्षा की संरचना में अंतराल भरने हेतु मूल निवेश में सहायता देना तथा विहित दिशानिर्देशों के अनुसार राज्यों को समान निवेश हेतु प्रेरित करना।
- वानिकी व्यवसायिकों की कार्यक्षमता में वृद्धि करना और उचित प्रक्रिया द्वारा उपयुक्त नियोजन में सुविधा प्रदान करना।
- वानिकी क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप क्षमतावृद्धि के लिए कार्यक्रमों की श्रृंखला विकसित करना। इसमें भारतीय वन सेवा की क्षमतावृद्धि भी शामिल है जिसके लिए मुख्य प्रशिक्षण संगठन के रूप में भारतीय वन सेवा के लिए मध्य सेवा कालीन फेज–III प्रशिक्षण का अभिकल्प विकास और निष्पादन शामिल है।
- अंतर्राष्ट्रीय कौशल प्राप्त करने के लिए उचित सामंजस्य, संकाय और छात्रों के हस्तांतरण के द्वारा वानिकी शिक्षा के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना।

- भा.वा.अ.शि.प. में नीति अनुसन्धान समिति की मेजवानी करके पर्यावरण एवं वन मंत्रालय को नीति अनुसन्धान में सहायता देना और मंत्रालय को निवेश उपलब्ध करवाकर नीति अनुसन्धान अध्ययन करना।

3.3 विश्वविद्यालयों को सहायता अनुदान

राष्ट्रीय कृषि आयोग ने अपनी 1976 की रिपोर्ट में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर विश्वविद्यालयों में वानिकी शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध कराने की सिफारिश की। प्रारम्भ में वानिकी शिक्षा की सुविधाएं देने वाले विश्वविद्यालयों को भा.वा.अ.शि.प. द्वारा अनुदान दिया जाता था और वे भा.वा.अ.शि.प. की छत्रछाया में काम करते थे। किंतु भा.वा.अ.शि.प. को स्वायतता दिए जाने के बाद इस उद्देश्य के लिए भा.वा.अ.शि.प. द्वारा स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर कमी पूरी करने वाली सहायता के रूप में तकनीकी क्षमता बढ़ाने और वानिकी शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालयों की वानिकी संरचना को शक्ति प्रदान करने के लिए अनुदान दिया जा रहा है।

भा.वा.अ.शि.प. कृषि विश्वविद्यालयों के अधीन विभिन्न वानिकी अनुसन्धान विश्वविद्यालयों संस्थानों को अनुदान दिया जा रहा है जो वानिकी में स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर कोर्स कराते हैं ताकि देश में वानिकी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए संरचना को मजबूत बनाया जा सके। अप्रैल 2011 से मार्च 2012 तक सहायता अनुदान के रूप में रु. 100.00 लाख अवमुक्त किए जा चुके हैं।

3.4 भा.वा.अ.शि.प. प्रत्यायन बोर्ड

भा.वा.अ.शि.प. अधिमान्य बोर्ड की बैठक 13 अक्टूबर 2011 को देहरादून में आयोजित की गई। विश्वविद्यालयों की मुख्य समीक्षा रिपोर्ट और स्वआकलन पर गहराई से विचार किया गया और अधिमान्य बोर्ड की संस्तुति पर महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा निम्नलिखित 9 कॉलेजों/विश्वविद्यालयों और उनके नाम के आगे दी गई श्रेणी के अनुसार 18 अक्टूबर 2011 से तीन वर्ष के तय वानिकी पाठ्यक्रम को मान्यता दी गई।

पहले से मान्यता प्राप्त 9 विश्वविद्यालयों के साथ आज तक भा.वा.अ.शि.प. द्वारा वानिकी शिक्षा के लिए कुल 18 विश्वविद्यालयों को मान्यता दी गई है। आकलन तथा मुख्य समीक्षा की प्रक्रिया ने

क्र. सं.	विश्वविद्यालय का नाम	अधिमान्य श्रेणी
1.	वानिकी विभाग, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)	A
2.	वानिकी विभाग, कृषि कॉलेज, उड़ीसा, कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर (उड़ीसा)	A
3.	बागवानी एवं वानिकी कॉलेज, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पासीघाट (अरूणाचल प्रदेश)	A
4.	वानिकी प्राकृतिक संसाधन विभाग पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना (पंजाब)	A
5.	वानिकी विभाग एच एन बी गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)	A
6.	वानिकी कॉलेज डॉ. बालासाहेब सावंत कोंकम कृषि विद्यापीठ, डपोली (एम एस)	A
7.	ए एस पी ई ई बागवानी एवं वानिकी कॉलेज, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी (गुजरात)	A
8.	कृषि संकाय शेर-ए-कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर)	A
9.	बागवानी एवं वानिकी कॉलेज, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, झालवार (राजस्थान)	A

शैक्षिक उत्कृष्टता के उच्चतर स्तर को प्राप्त करने के लिए मार्ग उपलब्ध करवाया है।

3.5 नीति अनुसन्धान

'उन्नत आजीविका सहायता तथा धारणीय वन प्रबन्धन को सुनिश्चित करने के लिए अनुसूचित जाति तथा अन्य परम्परागत

वन निवासी (वन अधिकारों की पहचान) अधिनियम 2006 के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न संस्थानों में सहक्रिया' तथा 'गरीबी उन्मूलन तथा वानिकी कार्यक्रमों में सम्बद्धता का विश्लेषण' पर दो नीति अनुसन्धान अध्ययन वित्तीय वर्ष 2011-12 में पूरे किये गये।

10 अगस्त 2011 को सम्मेलन कक्ष नं. 403, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली में नीति अनुसन्धान समिति की पांचवीं बैठक का आयोजन किया गया।

3.6 मानव संसाधन विकास प्रयास

- वैज्ञानिक कार्मिकों की क्षमतावृद्धि के लिए मानव संसाधन विकास प्रयासों के रूप में 13 प्रशिक्षण कार्यक्रमों (एम सी टी फेज-III - तृतीय कोर्स के 01 प्रशिक्षण सहित) का आयोजन कई प्रतिष्ठित प्रशिक्षण संस्थाओं में किया गया जिसमें 227 भागीदारों (एम सी टी के 54 भागीदारों सहित) को 17 संस्थानों में प्रशिक्षित किया गया।
- वैज्ञानिकों को व्यापक राष्ट्रीय जानकारी देने के लिए वैज्ञानिकों के राष्ट्रीय स्तर की सेमीनार, कार्यशालाओं तथा संगोष्ठी में भाग लेने हेतु परिषद् स्तर पर 115 अनुमतियां दी गईं।
- विदेशो के दौरों के लिए 71 मामलों में सुविधा दी गई जिन्हें वैज्ञानिकों संवर्ग को अतिआवश्यक विदेशी प्रशिक्षण देने के लिए विभिन्न निधिकरण स्रोतों से सहायता के साथ अत: भारत सरकार ने अनुमोदित किया।
- भा.वा.अ.शि.प. में मानव संसाधन विकास पर नीति के बारे में समिति की रिपोर्ट तैयार करने के लिए भा.वा.अ. शि.प. के 4 एच आर डी समिति की बैठकें आयोजित की गई।
- शिक्षा निदेशालय द्वारा भा.वा.अ.शि.प. की क्षमतावृद्धि हेतु 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिए विभिन्न विशेषज्ञों की सलाह से एच आर डी योजना तैयार की गई।
- एक श्रेष्ठ शुरूआत के रूप में भा.वा.अ.शि.प. ने परिषद् की कार्यप्रणाली में नवीनता लाने के लिए अपने प्रकार की प्रथम 'भा.वा.अ.शि.प. की एच आर डी पॉलिसी' का सूत्रपात किया। नीति का विकास परिषद् तथा परिषद् के बाहर के विशेषज्ञों की सलाह और आपसी विचार विमर्श से किया गया जिसे परिषद् की वेबसाइट पर डाला जा चुका है।

3.7 भा.व.से. अधिकारियों के लिए मध्य सेवा कालीन प्रशिक्षण

भा.वा.अ.शि.प. ने भा.व.से. अधिकारियों के लिए मध्य सेवा कालीन प्रशिक्षण परियोजना फेज III (तीसरा कोर्स) सफलतापूर्वक पूरी की, जिसके लिए सर्वोत्तम संस्थागत प्रबंधन किए गए तथा अन्य संस्थानों यथा : भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून, भारतीय वन सर्वेक्षण, देहरादून, भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद, कोलोराडो राज्य विश्वविद्यालय, फोर्ट कोलिन्स (यू एस) तथा स्वीडिश कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (एस.एल.यू.)/ स्वीडिश वन निकाय स्वीडन से सहभागिता की गई और तारतम्य बनाया गया । पूरे देश से 54 अधिकारियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा वैज्ञानिकों और भा.व.से.अधिकारियों के लिए 1 अप्रैल 2011 से 31 मार्च 2012 तक निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए :

क्र. सं.	प्रशिक्षण	दिनांक	संस्थान	सहभागियों की संख्या
1.	आरक्षण नीति पर प्रशिक्षण	7 जून 2011	एस सी/एस टी आयोग, एल के डब्ल्यू, भा.वा.अ.शि.प. में	22
2.	वन जैवप्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण	11-20 जुलाई 2011	एन बी पी जी आर, नई दिल्ली	17
3.	रोपण स्टॉक सुधार पर प्रशिक्षण कृंतकीय परीक्षण	22 अगस्त 2011 से 02 सितम्बर 11 तक	आई एफ जी टी बी, कोयम्बटूर	14

क्र. सं.	प्रशिक्षण	दिनांक	संस्थान	सहभागियों की संख्या
4.	वैज्ञानिक सहायक कर्मचारियों आर ए –I, आर ए – II एवं टी ए – I का प्रयोगशाला प्रबंधन पर प्रशिक्षण	5 से 9 सितम्बर 2011	उ.व.अ.स. जबलपुर	25
5.	कागज और लुग्दी पर प्रशिक्षण	22 अगस्त से 2 सितम्बर 2011	सी पी पी आर आई, सहारनपुर	1
6.	आक्रामक प्रजातियों/अपतृणों का वन रोपणों एवं प्राकृतिक वनों की उत्पादकतों पर प्रभाव तथा विभिन्न मूल्य प्रभावी उपाय	13 से 17 दिसम्बर 2011 तक	के एफ आर आई, पीची, केरल	10
7.	'नैनो प्रौद्योगिकी' पर प्रशिक्षण	22 से 25 फरवरी 2012	का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर	15
8.	वैज्ञानिक सहायता स्टाफ आर ए –I, आर ए – II एवं टी ए – I का प्रयोगशाल प्रबंधन पर प्रशिक्षणा	27 फरवरी से 2 मार्च 2012	व.अ.सं., देहरादून	25
9.	'वृक्ष प्रजनन' पर प्रशिक्षण	27 फरवरी से 4 मार्च 2012	डॉ. वाई. एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन	6
10.	'पर्यावरणीय समाघात आकलन' पर प्रशिक्षण	19 से 23 मार्च 2012	व.अ.सं., देहरादून	15
11.	औषधीय पादपों की खेती पर प्रशिक्षण	19 से 23 मार्च 2012	आईएच बी टी, पालमपुर	3

3.8 शिकायत निवारण प्रकोष्ठ

उप महानिदेशक, शिक्षा, की अध्यक्षता में शिक्षा निदेशालय में शिकायत निवारण प्रकोष्ठ कार्यरत है तथा प्रकोष्ठ अनुसूचितजाति/जनजाति पिछड़ा वर्ग के लिए विभिन्न कार्य करता है। रिर्पोटाधीन अवधि के दौरान, प्रकोष्ठ में कर्मचारियों की कोई शिकायत नहीं आई है। सम्मेलन कक्ष, वैज्ञानिक हॉस्टल, व.अ.स., देहरादून में 7 जून 2011 तथा 27 – 28 मार्च 2012 को 'आरक्षण नीति' पर भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय तथा व.अ.स. देहरादून के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दो विशेष प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

3.9 व.अ.सं. (सम) विश्वविद्यालय

शैक्षिक कोर्स तथा प्रवेश

व.अ.सं (सम) विश्वविद्यालय द्वारा नियमित रूप से निम्नलिखित शैक्षिक कोर्स आयोजित किए जा रहे हैं : वानिकी, पर्यावरण प्रबंधन तथा काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एवं सेल्यूलोस एवं कागज प्रौद्योगिकी पर दो वर्ष का एम एस सी कोर्स। स्नातकोत्तर स्तर पर प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन तथा आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रवर्धन एवं जैव प्रौद्योगिकी पर एक वर्ष का डिप्लोमा कोर्स। इसके अलावा डॉक्टेरेट की डिग्री के लिए विश्वविद्यालय द्वारा वानिकी में अनुसन्धान कार्यक्रम उपलब्ध करवाए जाते है।

व.अ.सं. (सम) विश्वविद्यालय में शानदार शैक्षिक निवेश के लिए तीन चेयर्स आफ एक्सीलेंस उपलब्ध कराए गए हैं। वर्ष के दौरान चेयर्स आफ एक्सीलेंस को आपरेशनल बनाने के लिए दिशानिर्देश तैयार किए गए जिन्हें प्रतिष्ठित शिक्षाविदो के साथ परामर्श के उपरांत अंतिम रूप दे गया है।

खेलकूद स्पर्द्धा

विद्यार्थियों के मध्य स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क के महत्व पर बल देते हुए 22 से 26 मार्च 2012 तक विश्वविद्यालय में खेलकूद स्पर्द्धा आयोजित की गई।

नियोजन

सभी एम एस सी और डिप्लोमा कोर्सों के लिए विद्यार्थियों की प्रोफाईल के साथ स्थापन ब्रोशर्स तैयार किए गए हैं। विभिन्न

संगठनों/उद्योगों/कम्पनियों/गैर सरकारी संगठनों को नियोजन पुस्तिकाएं भेजी गई हैं और परिसर साक्षात्कार का सुविधाजनक बनाने हेतु लगातार समन्वय बनाया गया। विभिन्न संगठनों/उद्योगों/कम्पनियों/गैर सरकारी संगठनों के साथ परिसर साक्षात्कार किए गए और शैक्षिक वर्ष 2011–12 के लिए विद्यार्थियों को नियोजित किया गया।

क्र.सं.	संस्थान	चयनित विद्यार्थी
1.	रिलायंस फॉउन्डेशन (बी आई जे)	1. जोयस्तु दत्ता 2. शंकर दुबका 3. अंजली 4. वीरेंद्र सिंह 5. प्रबीना देवी
2.	भारतीय वन सेवा में चयन (यू पी एस सी राष्ट्रीय प्रतियोगिता परीक्षा द्वारा)	1. बेनाथी एम एम 2. रोहिणी बल्लव सैकिया 3. चमन लाल 4. हरजीत कौर 5. अमृता दत्ता 6. लोवित भारती 7. संजय बिस्वाल 8. अर्पणा
3.	मेसर्स विप्रो प्रौद्योगिकियां	हिमानी शर्मा
4.	सी डी एस परीक्षा	प्रिया नायर
5.	कृषि अधिकारी	स्वागतिकता नायक

पी एच डी कोर्स कार्य :

पन्द्रह सितम्बर से 31 दिसम्बर 2011 तक व.अ.सं. विश्वविद्यालय द्वारा पी एच डी के अनिवार्य कोर्स आयोजित किए गए। अनुसन्धान अध्येताओं के क्रियाकलापों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

क्र.सं.	रजिस्टर्ड/प्रस्तुति देने वाले/पी एच डी प्राप्त करने वाले अनुसन्धान स्कालर्स	विद्यार्थियों की संख्या
1.	पी एच डी के लिए रजिस्टर्ड अनुसन्धान स्कालर्स	64
2.	शोध प्रबंध जमा करने वाले अनुसन्धान स्कालर्स	28
3.	वर्ष के दौरान अनुसन्धान स्कालर्स का वाइवा वॉइस	38
4.	पी एच डी की डिग्री प्रदान करने हेतु आर डी सी का अनुमोदन	37

होशियारपुर में अधिष्ठापन प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों और अधिकारियों का कार्यक्षेत्रीय दौरा

आधुनिक पौधशाला एकक में अधिष्ठापन प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों और अधिकारियों का कार्यक्षेत्रीय दौरा

शिमला में प्रदर्शन के लिए व.अ.सं. विश्वविद्यालय द्वारा अधिकारियों और वैज्ञानिकों के लिए आयोजित दौरा

व.अ.सं. के विद्यार्थियों का फूलों की घाटी का दौरा

व.अ.सं. सम–विश्वविद्यालय में खेलकूद स्पर्द्धा

खेलकूद स्पर्द्धा के दौरान व.अ.सं. सम–विश्वविद्यालय में उपस्थित अधिकारी

व.अ.सं. सम–विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा पौधशाला का दौरा

व.अ.सं. सम–विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का कार्यक्षेत्रीय दौरा

3.10 अन्य हितधारकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण:

i. भा.वा.अ.शि.प. में 3 से 5 जुलाई 2011 तक सी डी एम मान्यीकरण तथा सत्यापन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसके लिए मेसर्स टी यू वी एस यू डी दक्षिण एशिया प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली ने सहायता प्रदान की। महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. सहित 20 सहभागियों ने प्रशिक्षण में सहभागिता की।

ii. भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में 17 से 21 अक्टूबर 2011 तक 'वन और जलवायु परिवर्तन : न्यूनीकरण और अनुकूलन के सुअवसर तथा चुनौतियां' विषय पर भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए एक सप्ताह का अनिवार्य प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कोर्स को पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया जिसमें विभिन्न राज्य वन विभागों के 33 भा.व.से. अधिकारियों ने भाग लिया। भागीदारों द्वारा कार्यक्रम की अत्यंत सराहना की गई।

iii. भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में 14 से 18 नवम्बर 2011 तक 'जलवायु परिवर्तन तथा कार्बन न्यूनीकरण' पर वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिविदों के लिए एक सप्ताह का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। कार्यक्रम को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया जिसमें 24 वैज्ञानिकों और प्रौद्योगविदों ने भाग लिया। सहभागियों द्वारा कार्यक्रम की सराहना की गई।

भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए एक सप्ताह के अनिवार्य प्रशिक्षण कोर्स के अवसर पर सहभागी और आयोजक

वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगविदों के लिए एक सप्ताह के प्रशिक्षण के दौरान सहभागी और आयोजक

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में 6 से 10 फरवरी 2012 तक 'जलवायु परिवर्तन तथा कार्बन न्यूनीकरण' पर महिला वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगविदों के लिए एक सप्ताह का प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 25 महिला वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगविदों ने भाग लिया। सहभागियों द्वारा कार्यक्रम की सराहना की गई।

महिला वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगविदों के लिए एक सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान सहभागी और आयोजक

भा.व.सं. अधिकारियों के लिए आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला के सहभागी तथा आयोजक

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा 13 और 14 फरवरी 2012 तक 'भारतीय वनों के लिए रेड/रेड प्लस का महत्व और कार्य क्षेत्र' विषय पर भा.व.से. अधिकारियों के लिए दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसे पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया तथा प्रशिक्षण कार्यशाला में विभिन्न राज्य वन विभागों के 18 भा.व.से. अधिकारियों ने भाग लिया। भागीदारों द्वारा कार्यक्रम की सराहना की गई।

हितधारकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए व.अ.स. द्वारा 27 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन प्रशिक्षणों के लक्षित वर्गों में राज्य वन विभागों के सहभागी, अधिकारी/ भा.वा.अ.शि.प. के वैज्ञानिक, अन्य संबंधित संस्थान, एन जी ओ तथा किसान शामिल थे।

वर्ष के दौरान राज्य वन विभागों के अधिकारियों, वैज्ञानिकों, एन जी ओ, विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों सहित विभिन्न हितधारक वर्गों को 33 प्रशिक्षण दिए गए। इसमें भा.व.से. अधिकारियों के लिए वन आनुवंशिकी संसाधन प्रबंधन प्रशिक्षण तथा महाराष्ट्र, उड़ीसा और तमिलनाडु के वन अधिकारियों के लिए ओरिएन्टेशन कार्यक्रम तथा तमिलनाडु के अन्य विभागीय अधिकारियों के लिए ओरिएन्टेशन तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शामिल थे। डॉ. एलीसन एम बेरी, प्रोफेसर, पादप विज्ञान विभाग, कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस, को व.अ.वृ.प्र.स. में आमंत्रित किया गया। अध्यक्ष द्वारा 'डटिस्का – फ्रेंकिया रूट नॉडल सेम्बोसिस में नाइट्रोजन एकत्रण की वर्तमान प्रवृत्तियां' पर विशेष व्याख्यान दिया गया तथा 'कैज्येरीना इक्वीसिटीफोलिया के रूट नाडल्स से फ्रेंकिया पृथक्करण' पर 2 दिसम्बर 2011 को जे आर एफ को प्रशिक्षण दिया गया।

बागवानी अधिकारियों को प्रशिक्षण

संस्थान द्वारा अपने को दिए गए अधिदेश के मुख्य पहलुओं पर 12 प्रशिक्षण आयोजित किए गए जिनमें राज्य वन विभाग वैज्ञानिक, एन जी ओ तथा विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी, लक्षित प्रशिक्षणार्थी थे। प्रशिक्षण का मुख्य विषय था 'उन्नत काष्ठ प्रसंस्करण तथा रोपण प्रकाष्ठ का उपयोजन'। इस प्रशिक्षण में कर्नाटक राज्य वन उद्योग निगम (के एस एफ आई सी) के अधिकारियों ने भाग लिया। आई डब्ल्यू एस टी के वैज्ञानिकों ने काष्ठ के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान दिए यथा : अल्पज्ञात/वैकल्पिक प्रजातियां और उनका व्यापार/स्थानीय नामों का परिचय, लठ्ठों की भण्डारण पद्धतियां और चीरा हुआ प्रकाष्ठ, चिरान की विभिन्न तकनीकें, विभिन्न प्रकाष्ठ गुणों की जानकारी का महत्व, काष्ठ में त्रुटियां तथा लठ्ठों और चीरे हुए प्रकाष्ठ का श्रेणीकरण, काष्ठ में फिंगर ज्वाइंटिंग तथा छोटे घेरे के रोपित प्रकाष्ठ के उपयोग का महत्व, मुख्य प्रकाष्ठों की कार्यक्षेत्रीय पहचान, काष्ठ सिझाई का महत्व तथा विभिन्न प्रकाष्ठ प्रजातियों का सिझाई शेड्यूल, सिझाई भट्टे (सोलर स्टीम, वैक्यूम प्रेस शुष्कन, आर्द्रता निवारक शुष्कन आदि) अन्य सिझाई पद्धतियां, काष्ठ परिरक्षण के मूल तत्व और काष्ठ परिरक्षण की आवश्यकता, परंपरागत तथा उभरती हुई काष्ठ परिरक्षक और परिरक्षण पादपों की संक्रियाएं, काष्ठ अपक्षयकारक कवकों से बचाव और नियंत्रण, नाशीकीट आक्रमण से प्रकाष्ठ की संवेदनशीलता तथा टिकाऊपन में वृद्धि, सिझाई भट्टों का प्रदर्शन तथा परिचय परिरक्षित पादप इत्यादि।

वा.अ.मा.सं.वि.के., छिंदवाड़ा में प्रशिक्षण तथा अन्य क्रियाकलाप

उ.व.अ.सं., जबलपुर के अंतर्गत सा.वा.मा.सं.वि.के., छिंदवाड़ा द्वारा 12 प्रशिक्षण आयोजित किए गए। लक्षित वर्ग थे : किसान/गैर सरकारी संगठन/महिला स्वावलंबी वर्ग/महिला वन समिति के सदस्य।

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा वर्ष में 28 प्रशिक्षण आयोजित किए गए। लक्षित वर्गों में प्रादेशिक सेना के सदस्य, इको टास्कफोर्स (असम), बी एस सी, (वानिकी) के विद्यार्थी, राज्य वन विभाग के कर्मचारी, पारि–विकास समिति के सदस्य, गैर सरकारी संगठन तथा ग्रामीण लोग थे।

'वनों में वैश्विक पोजिशनिंग सिस्टम अनुप्रयोग तथा वन संसाधन सर्वेक्षण' पर प्रशिक्षण की झलकियां

'जेयपोर आरक्षित वन में संरक्षण के लिए पादप वैविध्य गतिकी आकलन' पर प्रशिक्षण

राज्य पर्यावरण एवं वानिकी संस्थान, दीमापुर, नागालैण्ड और नागालैण्ड, (एस.ई.ए.एम.टी.आर.) वन विभाग, नागालैण्ड सरकार के अधिकारी प्रशिक्षार्थियों के लिए 'वन एवं भूमि संसाधन सर्वेक्षण में ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम अनुप्रयोग' पर प्रशिक्षण और कार्यशाला का आयोजन किया गया।

शु.व.अ.सं. जोधपुर द्वारा दिसम्बर 2011 तक कई हितधारकों के लिए वर्ष में 7 प्रशिक्षण आयोजित किए गए जिसमें 'भंगुर रेगिस्तानी पारिपद्धति' का धारणीय विकास पर 19 से 23 दिसम्बर 2011 तक भा.व.से. अधिकारियों के लिए एक सप्ताह का अनिवार्य प्रशिक्षण शामिल हैं। संस्थान को भारतीय वन सेवा के क्षमता विकास के उद्देश्य हेतु पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने रेगिस्तानी पारिपद्धति प्रबंधन पर महत्वपूर्ण प्रशिक्षण संस्थान माना गया है।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा वर्ष के दौरान राज्य वन विभाग अधिकारियों और पंचायत राज संस्थानों के प्रतिनिधियों, महिला मंडलों तथा किसानों के लिए 6 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। वर्ष 2011 में वनों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस की स्मृति में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके अतिरिक्त वन विभागों के वरिष्ठ तथा कार्यक्षेत्रीय कार्मिकों की दो विचार–विमर्श संवादात्मक बैठकें आयोजित की गईं जिनमें देवदार तथा बांज ओक के पौधशाला भण्डार के विभिन्न गुणवत्ता पैरामीरों से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर शिमला वन सर्कल में 19 मार्च 2012, रामपुर वन सर्कल में 21 मार्च 2012 को बैठकें की गई और वन विभाग से घनिष्ठ समन्वय किया गया।

'वैज्ञानिक पद्धति द्वारा लाख की खेती' पर जारी प्रशिक्षण

'वैज्ञानिक पद्धति द्वारा लाख की खेती' पर प्रशिक्षण के सहभागी

व.उ.सं., रांची द्वारा वर्ष के दौरान दो प्रशिक्षण आयोजित किए गए। 'वैज्ञानिक पद्धति से लाख की खेती' पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें झारखण्ड के सिम्डेगा जिले के किसानों ने भाग लिया। 'बांस प्रबंधन, खेती एवं सतत आजीविका प्रबंधन' पर किसानों, कार्यक्षेत्रीय कार्मिकों और ए टी एम ए, कटिहार (बिहार) के सहभागियों लिए प्रशिक्षण आयोजित किए गए।

3.11. महत्वपूर्ण विदेशी दौरे

भा.वा.अ.शि.प. के वैज्ञानिकों और अधिकारियों ने कई अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों/सम्मेलनों, सेमीनारों में भाग लिया और अनुसन्धान के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुसन्धान प्रलेख प्रस्तुत किए। मंत्रालय द्वारा कुल 71 मामलों में विदेश जाने की स्वीकृति दी गई। भा.वा.अ.शि.प. ने जिन महत्वपूर्ण आयोजनों में भाग लिया उनमें से मुख्य इस प्रकार हैं :

- श्री वी आर एस रावत, वैज्ञानिक–ई, जैवविविधता एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग ने 6 से 17 जून 2011 तक बॉन, जर्मनी में यू.एन. जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में भाग लिया गया।
- श्री वी आर एस रावत, वैज्ञानिक –ई, जलवायु परिवर्तन प्रभाग द्वारा यू एन एफ सी सी सी, सी ओ पी 17 तथा सी ओ पी/एम ओ पी –7 में 28 नवम्बर से 9 दिसम्बर 2011 तक डर्बन, अक्षिण अफ्रीका में भाग लिया।
- श्री ए. के. बंसल, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. (अतिरिक्त प्रभार) तथा श्री ओमकार सिंह, उप महानिदेशक (शिक्षा) द्वारा 18 से 26 मई 2011 तक भा.व.से. अधिकारियों के लिए मध्य सेवा कालीन प्रशिक्षण के संबंध में स्वीडिश कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय तथा स्वीडिश वन निकाय का दौरा किया गया।
- भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के प्रतिनिधि मण्डल ने डॉ. पी. जे. दिलीप कुमार, वन महानिदेशक के नेतृत्व में एडिनबर्ग का दौरा किया। जिस में डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., श्री एम एस गर्ब्याल, उप महानिदेशक (प्रशासन), डॉ. संदीप त्रिपाठी, उप महानिदेशक (अनुसन्धान), श्री ए. एम सिंह, डी आई जी, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा डॉ. एस एस नेगी, निदेशक, व.अ.स., देहरादून शामिल थे। जिसका उद्देश्य वन भू–दृश्य पुनर्स्थापन हेतु अनुभव बांटना था और यू के की टीम के साथ भारतीय वन भू–दृश्य पुनर्स्थापन परियोजना (एफ.एल.आर.) के वर्तमान तथा द्वितीय फेज पर बैठक करना था।
- डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. के नेतृत्व में प्रतिनिधि मण्डल ने 1 फरवरी 2012 को बैंकाक में आई यू सी एन की बैठक में भाग लिया जिसका उद्देश्य भा.वा.अ.शि.प. तथा आई यू सी एन के बीच द्विपक्षीय सहयोग विकसित करना था। डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा आई यू सी एन के समस्त सदस्यों के समक्ष भा.वा.अ.शि.प. के अनुसन्धान कार्यक्रम पर व्याख्यान दिया। दोनों प्रतिनिधि मण्डलों ने जैवविविधता संरक्षण के लिए विभिन्न संभाव्य सहयोगात्मक कार्यक्रम पर विस्तार से विचार–विमर्श किया। भा.वा.अ.शि.प. ने आई यू सी एन का सदस्य बनने हेतु सहमति दी तथा मैनग्रोव, बांस और जैवविविधता संरक्षण के क्षेत्र में सहयोग का वायदा

किया। सहयोग के लिए विभिन्न विषय क्षेत्रों को चिन्हित किया यथा : भू–उपयोग पद्धतियां, अकाष्ठ वन उपज, संयुक्त वन प्रबन्धन, जल संचयन, सीमावर्ती वानिकी, आक्रामक प्रजातियां, खनन एवं पुनर्स्थापन, वन और जीविकोपार्जन, जैव–प्रोस्पैटिंग तथा बायोपायेसी, गुप्त ग्रूव, अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्किंग तथा काला–कार्बन आदि।

व.अ.सं. द्वारा महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धता के परिप्रेक्ष्य में डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा 3 और 4 फरवरी 2012 को ता प्रोहम मंदिर में वृक्षों के पुनरुदार एवं संरक्षण पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया जिसमें ए पी एस ए आर ए, प्राधिकरण, कम्बोडिया के 23 भागीदारों ने भाग लिया।